Total Pages : 8

5544

M.A. (Final) Examination, 2016

JAINOLOGYS PRAKRIT LITERATURE

Paper–IV

(जैन विद्या सिद्धान्त एवं दर्शन)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).

Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).

All questions carry equal marks.

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

इकाई-I

(i) आचार्य सिद्धसेन की भेदाभेद दृष्टि से क्या तात्पर्य है?

(ii) अनेकान्त पद में सापेक्षवादी दृष्टि का सद्भाव है या नहीं कैसे? संक्षेप में लिखें।

इकाई-II

(iii) सिद्ध परमेष्ठी के किन्हीं तीन लक्षणों को उद्घाटित कीजिए।

(iv) ''छज्जीवणिया'' अध्ययन में किसका विवेचन है? नामोल्लेख कीजिए।

इकाई–III

(v) स्याद्वाद सिद्धान्त में सप्तभंगी का नामोल्लेख कीजिए।

(vi) रत्नत्रय को परिभाषित कीजिए।

इकाई–IV

(vii) कर्म के भेदों का नामोल्लेख कीजिए।

(viii) गुणस्थान किसे कहते हैं?

इकाई–V

(ix) गुजरात के किन्हीं दो कलाकेन्द्रों का वैशिष्ट्य संक्षेप में लिखिए।

(x) जैनाचार के संदर्भ में अहिंसा के सामाजिक अवदान को अपने शब्दों में संक्षेप में विवेचित कीजिए।

खण्ड–ब

इकाई–I

2. आचार्य सिद्धसेन का परिचय देते हुए जैन दर्शन की परम्परा में उनके अवदान को सिद्ध कीजिए।

3. निम्नांकित गाथा की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

परपज्जवेहिं असरिसगमेहिं णियमेण णिच्चमवि णत्थि।

सरिसेहिं पि वंजणओपि अत्थि ण पुणत्थपज्जाए।।

इकाई–II

4. (क) समणसुत्तं के आधार पर पंचपरमेष्टि के स्वरूप की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

(ख) निम्नांकित गाथा का संदर्भ अनुवाद कीजिए :

जहा दुभस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं।

न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।।

5. (क) निम्नांकित गाथा का ससंदर्भ अनुवाद कीजिए :

जाणिज्जइ चिन्तिज्जइ, जम्मजरामरणसंभवं दुक्खं।

न य विसएसु विरज्जई, अहो सुबद्धो कवडगंठी।।

(ख) दशवैकालिक ग्रन्थ का परिचय देते हुए क्षुल्लिकाचार के मूलभाव को संक्षेप में लिखिए।

इकाई-III

6. जैन दर्शन के अनुसार 'तत्त्व' पद को परिभाषित करते हुए अजीत तत्त्व की व्याख्या कीजिए।

7. अनेकान्तवाद की जैनदर्शन के संदर्भ में दार्शनिक एवं सामाजिक व्याख्या कीजिए।

इकाई-IV

8. जैनाचार की परम्परा में महाव्रतों पर एक निबन्ध लिखिए।

9. निम्नांकित पदों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(क) कर्म के 8 भेद

(ख) जैनदर्शन में 'मोक्ष'

इकाई-V

10. जैन शिक्षा पद्धति पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

11. जैन साहित्य और कला के सम्बन्ध पर प्रकाश डालिए।

खण्ड-स

इकाई-I

12. आचार्य सिद्धसेन की अनेकान्तिक दृष्टि पर, सम्मइसुत्तं के आलोक में, अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

इकाई-II

13. दशवैकालिक सूत्र में वर्णित 'षट्जीवनिका' के स्वरूप की विवेचना कीजिए।

इकाई-III

14. ''स्याद्वाद सिद्धान्त संशयवाद नहीं है'' जैनपरम्परानुसार स्याद्वाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

इकाई-IV

15. जैन श्रावकाचार की व्याख्या अणुव्रत एवं श्रावक प्रतिमाएँ के संदर्भ में कीजिए।

इकाई-V

16. ''जैन साहित्य में दर्शन के तत्त्व बिखरे पड़े हैं'' इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।